1.9 तर्क तथा विश्वास में अन्तर (Distinction between Reason and Belief)

दर्शनशास्त्र में तर्क कथनों की ऐसी श्रंखला होती है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति या समुदाय को किसी बात की प्रमाणिकता एवं वैधता प्रस्तुत की जाती है या उन्हें सत्य के प्रमाणन हेतु कारण प्रदर्शित किए जाते हैं। आम तौर तर्क को चिंतन का सर्वोच्च स्तर माना जाता है। तर्क एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है जिसमें प्राय: औपचारिक नियमों का अनुसरण किया जाता है। जब किसी उद्देश्य विशेष को केन्द्र में रखते हुए संगठित तथा व्यवस्थित स्वरुप में चिंतन प्रक्रिया की जाती है एवं इसमें कार्य-कारण संबंधों को स्थापित करने का प्रयत्न किया जाता है तो उसे तर्क कहते है।

तर्क वास्तव में कार्य-कारण संबंध स्थापित करने की एक ऐसी उच्च स्तरीय संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसमे ज्ञान तथा अनुभव पर आधारित बौद्धिक कसौटियों के द्वारा कुछ संगठित तथा व्यवस्थित सोपानों का अनुसरण करते हुए किसी समस्या का सर्वोत्तम समाधान निकालने का प्रयास किया जाता है। तर्क में संकेतों, प्रतीकों, भाषा, प्रत्ययों आदि का प्रयोग किया जाता है। तर्कों को मुख्यतः दो प्रकारों में विभाजित किया जाता है- पहला निगमन तर्क और दूसरा आगमन तर्क।

सामान्यत: विश्वास किसी व्यक्ति, वस्तु या परिस्थिति आदि के प्रति मानव की मनोस्थिति का अभिव्यक्तिकरण है। विश्वास मानव के व्यक्तित्व का एक स्थायी एवं अभिव्यक्त रूप है जोकि उसके विचारों व क्रिया-कलापों के प्रदर्शन में दिखता है। विश्वास एक मानसिक शक्ति है। इसमें व्यक्ति अनुभाविक सक्ष्यों के आधार पर किसी विषय में तथ्यात्मक निश्चय के साथ कथन या कार्य करता है। एक व्यक्ति जो कुछ जानकारी रखता है उसे वह एक सकरात्मक या नकारात्मक कथन में व्यक्त करता है क्योकि इस पर उसका विश्वास होता है। विश्वास की सत्यता व असत्यता विषय एवं व्यक्ति की ज्ञान की सीमा पर निर्भर करता है। किसी व्यक्ति को ज्ञान केवल अनिवार्य सत्यों का जैसे गणित, विज्ञान, तर्कशास्त्र आदि का ही हो सकता है, शेष सभी विषय विश्वास की सीमा परिधि के अंतर्गत नहीं आते हैं जहाँ प्रत्येक अनुभाविक विषय के प्रमाण उपलब्ध होना संभव नहीं है। ज्ञान को एक सत्य विश्वास भी माना गया है जोकि किसी अटकल या अंदाज़ पर निर्भर न हो।

संक्षिप्त में तर्क द्वारा प्राप्त ज्ञान सदैव प्रमाणिक व वैध माना जाता हैं जबकि विश्वास पर आधारित ज्ञान प्रमाणिक या अप्रामाणिक तथा वैध या अवैध किसी भी श्रेणी का हो सकता है। तर्क के लिए एक उच्च स्तरीय मानसिक चिंतन प्रक्रिया आवश्यकता होती है जबकि विश्वास एक सामान्य मनोस्थिति होती है। तर्क कार्य-कारण नियमों पर आधारित होते है जबकि विश्वास के साथ ऐसा हो भी सकता है और नहीं भी।

Scanned with CamScanner